Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

UGA–108

B.A. (Part–II) DUE Ist Year Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)।

1. (i) कबीर के गुरु सम्बन्धी विचार प्रकट कीजिए।

   (ii) तुलसी की समन्वय साधना पर टिप्पणी लिखिए।

(iii) 'ढोला मारू रा दूहा' किस काव्य रूप की रचना है ? इस काव्य रूप की कोई **दो** विशेषताएँ बताइए।

(iv) मीरां की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए।

(v) रसखान की मुख्य कामना क्या है ?

(vi) विद्यापति ने भगवान शिव की वन्दना किस रूप में की है ?

(vii) काव्य-दोष किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं ?

(viii) शब्द-शक्ति किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार की होती हैं ?

(ix) आदिकालीन साहित्य की सामान्य विशेषताएँ बताइए।

(x) यमक व श्लेष अलंकार के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित व्याख्याओं में से किन्हीं **पाँच** पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. मनहुँ कला ससिभांन, कला सोलह सो बन्निय।

बाल बैस ससि ता समीप, अम्रित रस पिन्निय॥

बिगसि कमल म्रिग-भ्रमर, बैन, खंजन म्रिग लुट्टिय।

हीर, कीर अरू बिम्ब, मोति, नष-सिष अहि घुट्टिय॥

छप्पति मयंद, हरि, हंस गति, बिह बनाय संचै सचिय।

पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुँ काम कामिनि रचिय॥

3. आजु पेखल नन्द किसोर।

केलि बिलास सबहु अब तेजल अह निसि रहत विभोर।

जब धरि चकित बिलोकि बिपिन तट पलटि आओलि मुख मोरि।

तब धरि मदनमोहन तरू कानन लोटए धैरज छोरि।

पुनु फिरि सोई नयन जदि हेरबि पाओब चेतन नाह।

भुजंगिनि द्रंसि पुनहि जदि दंसए तबहि समय विष जाह।

अब सुभ खन धनि मनिमय भूषन भूषित तनु अनुपाम।

अभिसरू बल्लभ हृदय बिराजहु जनि मनि-कांचन दामं।

4. नव पौरी पर दसव दुवारा। तेहि पर वाज राज-घरियारा॥

घरी सो बैठि गनै घरियारी। पहर पहर सो अपनी बारी॥

जबहि घरी पूजि तेई मारा। घरी-घरी घरियार पुकारा॥

परा जो डांड जगत सब डांडा। का निचिंत माटी कर भांडा॥

तुम तेहि चाक चढै हौ कांचे। आएहु रहे न थिर होइ बांचे॥

घरी जो भरी घटी तुम आऊ। का निचित होइ तोउ बटाऊ॥

पहरहि पहर गजर निति होई। हिया बजर मन जाग न सोई॥

मुहम्मद जीवन-जल भरन, रहंट-घरी के रीति।

घरी जो आई ज्यौं भरी, ढरी जनम गा बीति॥

5. ऐसी मूढ़ता या मनकी।

परिहरि राम-भगति-सुरसरिता, आस करत ओस कनकी॥ 1॥

धूम-समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि-मति घनकी।

नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की॥ 2॥

ज्यों गच-काँच बिलोकि, सेन जड़ छाँह अपने तनकी।

टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की॥ 3॥

कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि! जानत हौ गति जनकी।

तुलसीदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पनकी॥ 4॥

6. मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।

जैसैं उड़ि जहाज को पंच्छी, फिरि जहाज पर आवै।

कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।

परम गंग कौं छाँड़ि पियासौं, दुरमति कूप खनावै।

जिहिं मधुकर अम्बुज-रस-चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।

सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै॥

7. बसो मेरे नैनन में नंदलाल।

मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल।

अधर सुधारस मुरली राजित, उर वैजन्ती माल॥

क्षुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर शब्द रसाल।

मीराँ के प्रभु सन्तन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल॥

8. मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पशु हौं तौ कहा बस मेरे, चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन॥

पाहन हौं तो वहीं गिरि को, जो धर्‌यो कर छत्र पुरन्दर धारन।

जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. "कबीर सच्चे समाज-सुधारक थे।" इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

10. "रसखान सचमुच रस की खान है।" इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

11. भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख विशेषताओं की सविस्तार व सतर्क व्याख्या कीजिए।

12. अलंकार की परिभाषा देते हुए काव्य में उसका महत्व स्पष्ट कीजिए।